B.A. History Hon's Part-II

Paper: IV, Unit: I(c), Date: 10.8.2020 Lecture No:-14

Lession: दक्षिण-पूर्व एशिया में राष्ट्रीय जागरण के उदय एवं विकास

20वीं शताब्दी के शुभआरम्भ में अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं ने दक्षिण-पूर्व एशिया में राष्ट्रवाद को जन्म दिया। उस समय सम्पूर्ण एशिया में राष्ट्रीयता की लहर फैल गई थी। परम्परावाद पर आघात, नूतन विचारों और तकनीक का जन्म, सामन्तवादी समाज में विच्छेद, पश्चिमी साम्राज्यवादी देशों के राजनीतिक और आर्थिक शोषण का विरोध करने पर वहाँ के राष्ट्रीय जागरण को प्रभावित किया, और निम्नलिखित तत्वों ने राष्ट्रवाद को जन्म दिया:-

पश्चिमी साम्राज्यवाद 1511 में मलक्का पर पुर्तगालियों का अधिकार हो गया। पुर्तगालियों की शक्ति कमजोर पड़ने पर 1641 में डचों ने मलक्का पर अधिकार कर लिया। 1795 में यह अंग्रेजों के अधिकार के अधीन हो गया। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हिन्द-चीन पर फ्रांस का अधिकार हो गया। 1885 में बर्मा पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। हिन्देशिया में तो पहले-पहल पुर्तगालियों ने पैर रखे परन्तु 18वीं शताब्दी के अन्त में उस पर डचों का अधिकार हो गया। 1521 में स्पेनी नाविक मैगलेन फिलिपीन आया। 17वीं शताब्दी के अन्त तक बहुत भाग पर स्पेनियों का अधिकार हो गया। 1893 में फ्रांस ने स्याम (थाईलैंड) पर अधिकार करने में असफल प्रयास किया। इस प्रकार दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों पर 19वीं शताब्दी के अन्त तक साम्राज्यवादियों का अधिकार हो गया। 16वीं या 17वीं शताब्दियों के यूरोपीय राज्य इस स्थिति में नहीं थे कि वे विजित दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों पर शासन करें। वे ऐसा चाहते भी नहीं थे। 17वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जब फ्रांस ने स्याम में कैथोलिक धर्म का प्रचार-प्रसार शुरु किया तो इसका काफी विरोध किया गया। बर्मा, अनाम और तोंगकिंग ने भी ईसाई धर्म-प्रचारकों का विरोध किया।

आर्थिक शोषण 15वीं शताब्दी के पश्चात यूरोपीय साम्राज्यवादी देशों ने दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों का आर्थिक शोषण करना प्रारंभ किया। जब एक बार उन देशों में उनकी बस्तियाँ बस गईं और उनके प्रदेश उनके अधिकार में आ गए तो आर्थिक शोषण की गति बढ़ गई। फलतः एक ओर तो साम्राज्यवादी देश सम्पन्न बनते गए और दूसरी ओर दक्षिण-पूर्व एशियाई देश निर्धन होते गए। पश्चिमी देशों के आर्थिक शोषण की कब्र पर दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में राष्ट्रवाद का जन्म हुआ।

गौरवशाली अतीत दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के जागरुक और निराश बुद्धिजीवी अपने-अपने देशों के गौरवशाली इतिहास से अवगत थे। गौरतलब है कि पश्चिमी इतिहासवेत्ताओं, पुरातत्वविदों और विद्वानों ने बड़ा योगदान दिया था।

पश्चिमी शिक्षा का प्रभाव विचारधारा और चिन्तन ने दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के राष्ट्रवाद को काफी प्रभावित किया। वहाँ के लोग ब्रिटिश शासन पद्धति, अमेरिका के स्वतंत्रता-संग्राम, फ्रांसीसी क्रांति के स्वतंत्रता, समानता एवं भ्रातृत्व सिद्धान्त आदि से काफी प्रभावित हुए। पश्चिमी साम्राज्यवादी शासक जगह-जगह पर उनका अपमान करते थे। यूरोपीय होटल रेस्तरां, नाट्यगृह, अस्पताल, स्कूल आदि के द्वार उनके लिए बन्द थे। वे प्रेस, तार, रेलवे आदि की उपयोगिता समझने लग गए थे।

पड़ोसी देशों का प्रभाव दक्षिण-पूर्व एशिया अपनी पड़ोसी देशों भारत और चीन से काफी प्रभावित हुआ है। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारत में राष्ट्रीय जागरण के उदय और 20वीं शताब्दी के शुरुआत से इसके विकास ने दक्षिण-पूर्व एशिया को काफी प्रभावित किया है। चीन के 1911 की क्रांति और मंचूवंश का उन्मूलन एक महत्वपूर्ण घटना थी। डा. सनयात सेन का व्यक्तित्व और

उनका कोमिंतांग दल अनुकरणीय बन गया। इसी प्रकार जापान का मेईजी
पुनर्स्थापन, आधुनिकीकरण एवं साम्राज्यवादी जीवन काफी महत्वपूर्ण घटना सिद्ध हुए।
दक्षिण-पूर्व एशियाई देश भारत, चीन और जापान से काफी प्रभावित हुए।

प्रथम विश्वयुद्ध (1914-18) ने भी दक्षिण-पूर्व एशिया को प्रभावित
किया। बर्मा, मलाया, हिन्दचीन आदि देशों ने केन्द्रीय या धुरी राष्ट्रों को पराजित
करने में मित्रराष्ट्रों की सहायता की। अमेरिकी राष्ट्रपति वुड्रो विल्सन के चौदह
सूत्रों से लोगों में बड़ी आशा बंध गई थी कि युद्धोत्तर विश्व में अमन-चैन बना
रहेगा। फलत: दक्षिण-पूर्व एशिया में साम्राज्यवादी देशों को घृणा और सन्देह की
दृष्टि से देखने लगा। लोगों में एकता और संगठन की भावना आई।

1917 की रूसी क्रांति बोल्शेविक क्रांति ने भी दक्षिण-पूर्व एशिया
को प्रभावित किया। मार्क्सवाद ने कहा कि पूँजीवाद साम्राज्यवाद पर आधारित है अत:
साम्राज्यवाद के अन्त होने से पूँजीवाद का अन्त हो जाएगा। रूस के क्रांतिकारियों
ने साम्राज्यवाद का विरोध किया। दक्षिण-पूर्व एशिया ने रूसी क्रांति का
स्वागत किया। लेनिन अन्तराष्ट्रीय साम्यवाद की स्थापना चाहता था। दक्षिण-
पूर्व एशियाई देश साम्राज्य की कब्र पर साम्यवादी सरकार की स्थापना चाहते
थे। अत: राष्ट्रवाद का साम्राज्यवाद से संघर्ष हो गया।

युद्धोत्तर वर्ष प्रथम विश्वयुद्धोत्तर कालीन वर्षों ने दक्षिण-पूर्व
एशिया में राष्ट्रवाद को प्रोत्साहन दिया। युद्ध समाप्त होने के बाद एशिया,
देशों में निराशा की लहर दौड़ पड़ी। ब्रिटिश सरकार ने भारत के प्रति अपने
युद्धकालीन वादों को पूरा नहीं किया। उल्टे उसने राष्ट्रीय आन्दोलन को कुचलने
के लिए रौलेट ऐक्ट पारित किया गया। अत: वहाँ महात्मा गाँधी के नेतृत्व में
असहयोग आन्दोलन चल पड़ा। अत: यह आन्दोलन असफल रहा और दक्षिण-
पूर्व एशियाई देशों को काफी प्रभावित किया। जापान ने मंचूरिया को और इटली
ने अबीसीनिया को हड़प लिया।

द्वितीय विश्वयुद्धकाल (1939-1945) में स्वयं दक्षिण-पूर्व
एशिया युद्धक्षेत्र बन गया था। उन्हें जान-माल की अपार क्षति उठानी पड़ी।
दक्षिण-पूर्व एशिया के अनेक देशों पर जापान का अधिकार हो गया। जापान
ने 'एशिया एशियाईयों के लिए' का नारा बुलंद किया। उसने दक्षिण-पूर्व एशिया
देशों को पश्चिमी साम्राज्यवादी देशों के चंगुल से मुक्त किया और उनका
मसीहा बन गया।

द्वितीय विश्वयुद्धोत्तर कालीन वर्षों ने दक्षिण-पूर्व एशिया को
काफी प्रभावित किया। वहाँ राष्ट्रीय आन्दोलन जोर पकड़ने लगा। कई देशों
में तो क्रांतियाँ हो गई। युद्धकाल में तो कई देशों पर जापान का अधिकार हो
गया। अत: वहाँ राष्ट्रीय आन्दोलन जोर पकड़ने लगा। ब्रिटेन, हालैंड, फ्रांस
आदि साम्राज्यवादी देश राष्ट्रवादियों से समझौता करने लगे।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि दक्षिण-पूर्व एशिया के
राष्ट्रवाद के जन्म के अनेक कारण थे। 1904-5 का रूस जापान युद्ध, प्रथम विश्वयुद्ध
आदि प्रमुख है। वस्तुत: दक्षिण-पूर्व एशिया के पश्चिमी साम्राज्यवाद का राष्ट्रवाद से टक्कर
टकराव हुआ। जिसमें राष्ट्रवाद की जीत हुई।

डॉ० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी०बी० कालेज, जयनगर